Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 Impact Factor - 7.139 Indexed (SJIF)

February 2020 Special Issue-23 Vol.2

The Role of Language and Literature in Unity in Diversity

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal, Dr.Aqueela Syed Gous

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 23 , Vol. 2 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
February 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

Index

1.	हिंदी साहित्य एवं समाज में सिनेमा का योगदान प्रा.वाघमारे के.एच.	1
2.	हिंदी भाषा और मीडिया डॉ. अशोक अंधारे	3
3.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी प्रा. डॉ. बायजा कोटुळे	5
4.	अनुवाद का अध्ययन प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव	7
5.	विभूति नारायण राय के 'तबादला' उपन्यास में राजनीति डॉ. मुरलीधर लहाडे	9
6.	सोशल मीडिया और हिंदी का बढ़ता प्रभाव कारामुंगीकर बालाजी गोविंदराव	11
7.	अनुवाद अध्ययन प्रा. डॉ. मृणाल शिवाजीराव गोरे	13
8.	"स्तंभ लेख और स्तंभ लेखक की विशेषताएँ" प्रा. डॉ. महावीर उदगीरकर	15
9.	भाषांतराचे स्वरुप आणि मराठी साहित्य प्रकाराचे भाषांतर दुष्यंत आनंदराव शिंदे	17
10.	''अनुवाद की अवधारणा'' डॉ.राम सदाशिव बडे,	20
11.	वैश्विकरण के संदर्भ में 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास (काशीनाथसिंह) प्रा. जाधव जे. बी.	22
12.	हिन्दी साहित्य की पत्रकारिता डॉ. वडचकर शिवाजी	24
13.	हिन्दी भाषा और मीडिया प्रा.डॉ. रेखा मुळे,	26
14.	भाषा और साहित्य प्रा. डॉ. भिसे संगीता दिलीपराव	२८
15.	हिन्दी भाषा और साहित्य बोडके ज्ञानेश्वर विनायकराव	33

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 23 Vol. 2 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
February 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

अनुवाद का अध्ययन

प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिन्दी विभागाध्यक्षा, कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय,सोनपेठ , जि.परभणी महाराष्ट्र –431516

इक्वीसवी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृती की शताब्दी है और इस कारण से इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है। अनुवाद से भाषा का आधुनिकीकरण होता है । वह सम्प्रेषण सेतु है । सम्प्रेषण के नये माध्यमों के अविष्कारों ने 'वसुर्धेव कुटुम्बकम्' की उपनिषदीय कल्पना को साकार बना दिया है । भारत जैसे बहुभाषा–भाषी राष्ट्र में परस्पर अनुवाद की तो आवश्यकता है ही, लेकिन विश्व–भाषाओं में भी अनुवाद की अनिवार्यता है । वर्तमान युग में अनुवाद की महत्ता और उपयोगिता केवल भाषा और साहित्य तक ही सीमित नही है, वह हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय संहति और एक्य का माध्यम है, जो भाषायी सीमाओं को पार करके भारतीय चिन्तन और साहित्य की सर्जनात्मक चेतना की समरूपता के साथ–साथ, वर्तमान तकनिकी और वैज्ञानिक युग की अपेक्षाओं की पूर्ति कर, हमारे ज्ञान–विज्ञान के आयामों को देश –विदेश से संम्पृक्त करती है ।

अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है । आज के सिमटते हुए संसार में सम्प्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है । एक भाषा –भाषी समुदाय में परस्पर संम्पर्क–साधन तथा विचार–विमर्श के लिए भाषा का व्यवहार किया जाता है, किंन्तु दो भिन्न भाषा–भाषी समुदायों के बीच विचारों के आदान–प्रदान के लिए अनुवाद की सहायता लेनी पडती है । पहले अनुवाद की उपयोगिता धार्मिक ग्रंथो में व्यक्त विचारों को जनता में लाने के लिए थी । रंजन साहित्य के लिए एक सीमित वर्ग द्वारा भी इसका उपयोग किया जाता था । आज की आवश्यकताओं ने सम्प्रेषण–व्यापार के विभिन्न संदर्भो के बीच अनुवादक को ला बिढाया है । आज छोटे बडे राष्ट्र और छोटी बडी जतियॉ भी परस्पर सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है। सामान्य व्यक्ति भी संसार के विभिन्न भाषा–भाषी समुदायों के साथ संपर्क करना चाहता है ।

यह एक प्रकट सत्य है कि भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है । इस विशाल राष्ट्र में खान–पान, रहन–सहन और बोली–भाषाओं की दृष्टि से अनेक भेद है, "सभ्यता अपने अस्तित्व के लिए अनुवादकों की ऋणी है । " यह एक मान्यताप्राप्त वक्तव्य है । अनुवादों के माध्यम से ही ज्ञान एक भाषा–भाषी समुदाय से दूसरे भाषा–भाषी समुदाय तक व्याप्त होता है । जीवन दर्शन, सामाजिक व्यवस्थाऍ, धर्म एवं संस्कृति को भारतीय भूखण्ड में एक कोने से दूसरे कोने तक परिव्याप्त करने का श्रेय अनुवादों को भी है, युगो–युगों से भारतीय उपखण्ड धार्मिक–सांस्कृतिक धरातल पर एक इकाई रहा है । ये कार्यकलाप युगों से ऋषियों एवं मनीषियों के तत्वावधान संचालित होते आ रहे है । इतिहास की गहराइयों में न जाकर इतना मात्र कहा जा सकता है कि साहित्यिक गतिविधियॉ ही इस उपखण्ड की सामाजिक सांस्कृतिक एकता की प्रेरक शक्तियॉ रही है । यह वेद इतिहास ग्रंथ और पुराणों के द्वारा साध्य हुआ । काव्य के द्वारा आगे प्रसारित हुआ है । मुलतः इनका प्रणयन संस्कृत में हुआ और आगे चलकर लैकिक भाषाओं में । हर भाषा का इस क्षेत्र में अपना एक योगदान रही है । अनुवादों के आधार पर भाषा समृद्ध होती है । हम अनुवाद व्यावहारिक कारणों से पढते है भाषा का आनन्द लेने नही । इस नाते भषा के विभिन्न आयामों से परिचित होते हैं और भाषा को सामयिक आवश्यकता के अनुरूप बनाते है । अनुवाद के आधार पर भाषा में अभिव्यक्ति की सीमाऍ उजागर होती है और सीमाओं को विस्तार देने के लिए या उनकों नया आयाम देने हेतु भाषा का आधुनिकीरण करना पडता है ।

भाषा का आधुनिकीरण अनुवादों के माध्यम से होता है । इसमें भाषा को दूसरे भाषा के संस्कारों को अपनाने की प्रक्रिया रहती है । इसे स्पष्ट करते हुए डॉ.रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव लिखते हैं– "आधुनिकीकरण आज के प्रसंग में अभिव्यक्तिपरक संस्कृति प्रगतिपरक संस्कृति में रूपान्तरण की विधि है । दूसरे शब्दों में कहें तो यह धार्मिक एवं सौंन्दर्यचेता वृत्ति को ज्ञानात्मक एवं आर्थिक वृत्ति में ढालने की सामाजिक–सांस्कृतिक प्रक्रिया है वस्तुतः यह वही विधी अथवा प्रक्रिया है जिससे मध्ययुगिन यूरोप गुजरकर आज के आधुनिक युग में पहुँचा है?"1

आज सम्प्रेषण के साधनों के अविष्कारों के कारण संसार इतना छोटा बन गया है कि एक प्रदेश के लोग दूसरे प्रदेश के जीवन और गतिविधियों बारे में जानने की लिए बहुत ही उत्सुक रहते है । विश्व मैत्री एवं सहयोग के इस नये दौर में किसी भी प्रदेश की जनता को समझने के लिए उस प्रदेश के साहित्य को समझना अत्यन्त अनिवार्य हो गया । अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन सर्वेक्षण यही प्रमाणित करता है कि, आज हम अनुवाद के युग में जी रहे हैं । संसार की सारी प्रमुख भाषाऍ परस्पर अनुवाद करती रहती है । अनुवाद की उपादेयता स्पष्ट करते हुए जी, गोपीनायन लिखते है – "भारत जैसे बहुभाषा–भाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वंयसिध्द है । भारत के विभिन्न प्रदेशो के साहित्य में लिखित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एक मात्र अचूक साधन है । इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकनेवाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और सुदृढ बना सकते है। "2

अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जो इतिहास के विभिन्न मोडो पर सांस्कृतिक नवजागरण का कारण बना है । आज की मानव संस्कृती में अनुवाद की भूमिका बहुत ही महत्वपुर्ण है । दो भाषाओं के आपसी अनुवाद में सांस्कृतिक

आदान–प्रदान तो होता ही है मनुष्य को मनुष्य के निकट आने का मौका भी मिलता है । इतना ही नहीं बल्कि दो जीवन शैलियों का मिलन होता है । अनुवाद की मूलभूत एकता का व्यक्ति चेतना एवं विश्व चेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है । ''जैन वैज्ञानिक एवं अनुवाद तत्ववेत्ता थियोडर सेवरो के अनुसार, अनुवाद इसलिए सम्भव हो पाता है कि सभी देशो के मानव मूल रूप से एक ही वंश के है ।''3 यह एक अन्तः सम्प्रेषण की प्रक्रिया के रूप में महत्वपुर्ण कदम है जिससे मानव–मानव की सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, एवं मनोवैज्ञानिक तत्वों की जानकारी प्राप्त कर सकता है । मानव की सामान्य भाषा तो सार्वभौमिक मानवीयता है । एकता के बिन्दु अन्तः सलिला है । अनुवाद ही एक ऐसी कडी है जो समय, दूरी और भेदभाव को खतम कर एकता पैदा कर सकता है । अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा मे भावों का रूपान्तरण है । वास्तव में वह एक सांस्कृतिक व्यापार है । अनुवाद ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रिया है जिसका संबन्ध मूल्य–व्यवस्था से है, जीवन पद्धति से हैं, समाज की बुनावट के साध है, उसकी सोच और प्रवृत्ति को दिशा देते की क्रिया के साथ है, पुरानी जमीन तोडकर नयी जमीन तैयार करने की कृति से है, अनुभूति के क्षेत्र को विस्तृत रूप देने के साथ है, नयी मानवतावादी भूमिका के साथ है । अनुवाद मात्र एक भाषिक धर्म निभाने की प्रक्रिया नही है, एक सांस्कृतिक दूत बनकर नयी मूल्य व्यवस्था की खोज है जब इस सोच सें अनुवाद किये जाते है तभी एक नयी जमीन उस भाषा में तैयार हो जाती है । उस काल के लेखकों ने अनुवाद द्वारा यह कार्य किया है।''4

साहित्यिक आदान–प्रदान तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए अनुवाद सशक्त उपादान है ।इस संदर्भ में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के विचार दृष्टल्य है उन्होंने अपने लेख में कहा है – ''उत्तम प्रकार की साहित्यिक कृतियों का प्रकाशक और अनुवाद आपको उत्तर भारत में भी अधिक महत्व देगा । इस प्रकार उत्तर भारत की हिन्दी की कृतियॉ मलयालम और अन्य भाषाओं में पढी जाऍगी और अहिंन्दी भाषी क्षेत्र के साहित्य से हिन्दी भाषी भी परिचित होगें।''5 आदान–प्रदान की प्रक्रिया जीवन के सभी क्षेत्रों में निरंतर होती है । इस प्रक्रिया से ही मनुष्य सुसंस्कृंत, सुबुध्द एवं समृद्ध हो सकता है । भाषा के क्षेत्र में भी इस प्रक्रिया का कम महत्व नहीं है । प्रत्येक भाषा की अपनी सीमाऍ होते हुए भी कोई भी भाषा अपने आप को सीमाबध्द नहीं कर सकती । अनेकानेक दिशाओं से तथा स्त्रोंतो से वह प्रभावित होती रहती है । अनुवाद के प्रवाह से भाषिक समृध्दि होती है, अनुवाद के माध्यम से नऍ शब्दो का प्रवेश होकर शब्द संपदा में वृध्दि होती है । नए शब्द जैसे–जैसे व्यवहरत होते जाते है, वे उसी भाषा का अभिन्न अंग बन जाते हैं । भाषा की अभिव्यंजना क्षमता समृध्द करने के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण उपादन है ।

''वैज्ञानिक एवं तकनीकी, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, भूगोल इत्यादी सूचना साहित्य के अनुवाद में विषय का ज्ञान अपेक्षित है । साहित्यिक अनुवाद में भावात्मकता, कलात्मकता, सृजनात्मकता आदि लक्षण अपेक्षित होते है । मूल कृति के शिल्प विधान, संरचना का ज्ञान शैली विशेष का परिचय और लक्ष्य भाषा के सौंन्दर्य तत्व, भाषा की कोमलता एवं कला कौशल अपेक्षित होते हैं ।''6

अनुवादक को मूल लेखक के प्रति श्रद्धा का भाव होना अपेक्षित है । जैनेद्रकुमार के अनुसार ''अनुवादक के मूल व्यक्तित में पहले अपने को खो देना होता हैं, फिर उसी में आत्मभाव पैदा करके अपनी भाषा के माध्यम द्वारा उस भाषा भाषी के प्रति अपने को समर्पित करना पडता है ।''7 हर रचना के अनुवाद संन्दर्भ में विभिन्न तत्वों शैलियों का उपयोग करना होता है । कोई भी समुचित शैली को अपनाकर अनुवादक स्पष्ट, सरल, बोधगम्य भाषा में सफल अनुवाद प्रस्तुत करें । भाषा और शैली कोई भी हो – परम लक्ष्य कृति का सुस्वचिर, सुन्दर, सफल अनुवाद होना चाहिए ।

भारतीय साहित्य का परिचय अनुवाद के माध्यम से संसार को हुआ । संस्कृत का दर्शनिक साहित्य, रामायण, महाभारत आदि ग्रंन्थ, कालिदास आदि के नाटक, काव्य अनुवाद के माध्यम से विश्व के सामने प्रस्तुत हुआ । इस संदर्भ में मैक्समूलर का नाम भुलाया नहीं जा सकता । गुरूदेव रविंद्रनाथ के 'गीताजंली' का अनुवाद अंग्रजी में प्रकाशित हुआ और वह विश्वश्रेष्ठ नोबल पुरस्कार से गौरवान्वित हुआ । नोबल पुरस्कार प्राप्त विभिन्न भाषाओं के श्रेष्ठ ग्रंथ अनुवाद के माध्यम से देश–विदेश में पहुॅच पाते हैं । उन रचनाओं के कारण लेखकों की अन्य रचनाओं की ओर भी ध्यान आकृष्ट होता है । अतः अनुवाद एक ऐसा सप्तरंगी इंद्रधनुष है कि जो निरंतर प्रत्येक भाषा के साहित्याकाश में खिला रहता है और अपने चमत्कार से सबको मोहित कर लेता है । निष्कर्षतः यह कहा जाता है कि अनुवाद की उपादेयता बहुमुखी है । साहित्यिक आदान–प्रदान भाषा वृध्दि व्यापक जीवनानुभूति, अभिव्यंजना शैली, साहित्य की नई विधाओं का प्रणयन, भाषाध्ययन की प्रेरणा, भावात्मक एकता आदि अनेक रूपों में अनुवाद का महत्व सिध्द हुआ है ।

संदर्भ :–

1. आलोचना, पूर्णांक 82, अप्रैल –जुन 1978 ई – पृ. 09
2. अनुवाद : सिद्धान्त और प्रयोग –जी गोपीनाथ, भूमिका – पृ. 5
3. अनुवाद क्या है – संम्पादक डॉ भ.ह. राजुरकर, डॉ.राजमल बोरा – पृ. 74
4. अनुवाद वक्त है– संमावक डॉ. भ.ह.राजुरकर, डॉ.राजमल बोरा – पृ. 104
5. अनुवाद सिध्दान्त एवं प्रयोग – डॉ आदिनाथ सोनटक्के – पृ. 86
6. अनुवाद स्वरूप और प्रक्रिया – डॉ. सी.एच.रामुलु – पृ. 11
7. अनुवाद कला : कुछ विचार – जैनेन्द्र कुमार – पृ. 14

PRINCIPAL
Late Ra... College, ...ar (ACS)
...ist. Parbhani